International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 12; December 2016; Page No. 211-214

कुंकणाः जाति और बोली

डॉ॰ उत्तम पटेल

एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला. वलसाड, गुजरात, भारत।

सारांश

गुजरात प्रदेश भारत का अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य है। इस प्रदेश के उत्तर में मारवाड़-राजस्थान, पूर्व में मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र का खानदेश क्षेत्र है, दक्षिण में महाराष्ट्र के नाशिक तथा कोंकण जिलों की सीमाओं तक इसका विस्तार है। कच्छ, सौराष्ट्र और गुजरात उसके प्रादेशिक सांस्कृतिक अंग हैं। इनकी लोक-संस्कृति और साहित्य का अनुबंध राजस्थान, सिंध, पंजाब, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के साथ है। विशाल सागर तट वाले इस राज्य में इतिहास युग के आरंभ होने से पूर्व ही अनेक विदेशी जातियाँ थल और समुद्र मार्ग से आकर स्थायी रूप से बसी हुई हैं। इसके उपरांत गुजरात में २८ आदिवासी जातियाँ हैं। जन-समाज के ऐसे वैविध्य के कारण इस प्रदेश को अलग-अलग लोक-संस्कृतियों का लाभ मिला है।

मूल शब्दः कोंकण, गुजरात, मावली, कनसरी, कुंकणा

१. प्रस्तावना

१.१ कुंकणा: शब्द की व्युत्पत्ति व अर्थ

कुंकणा आदिवासी गुजरात के वलसाड, नवसारी व डांग जिले में, महाराष्ट्र के धूळे, नाशिक और थाणे जिले में, दादर और नगर हवेली में, कर्नाटक तथा राजस्थान के दक्षिणी कनारा जिले में बसे थे। ये आदिवासी कनारा (Kanara), कनारा कोंकणी (Kanara Konkani), कोकणा (Kokna), कोकणी (Kokni) नाम से पहचाने जाते थे।

'कुंकणा' शब्द की उत्पत्ति फारसी 'Canarim' शब्द से मानी जाती है। जिसका अर्थ फारसी में 'सागर किनारा' होता है। एक मान्यता अनुसार- "जुना जमानामां जे लोक दरेन मेरला रहक तेहला दरेन मेर रहनार इसां आखाय जहतां। दरेन मेर रहनेल लोकां माटे फारसीमां कोंकणां आखायचा। ते वरहुन आपणे लोकोनां नांव कुंकणा पडनेल आहा।" अर्थात् "प्राचीन समय में समुद्र के किनारे बसे लोगों को कुंकणा कहा जाता था। उसके ऊपर से इस जाति का नाम कुंकणा पड़ा।"

एक दूसरे मत के अनुसार कोंकण प्रदेश को ही परशुराम की भूमि के रूप में पहचाना जाता था। परशुराम की माता का नाम कुंकणा था और वे उनकी पहचान 'कुंकणासूता' के रूप की जाती थी। बाद में लोग उन्हें कोंकणा के रूप में पहचानने लगे थे। उसके बाद कोंकणा के अपभ्रंश से उस प्रदेश का 'कोंकण' नाम पड़ा। 'कोणकोण म्हणजे डोंगरमाथा!' -से 'कोकण' शब्द आया।

डॉ. कृष्णस्वामी अय्यंगार के मतानुसार 'कोकण' शब्द तामिळ भाषा से आया है। 'कोळ' व 'काणम' के संयोग से 'कोंकण' शब्द बना। कोंकण प्रदेश के सात प्रकार हैं- सातवीं शताब्दी के ग्रंथ 'प्रपंच हृदय' में कोंकण का कुपक, केरळ, मूषक, आळूक, पशुकोंकण, परकोंकण के रूप में उल्लेख मिलता है। सह्याद्रि खंड में सात कोंकण कहे गए है-लरेक, तुलंग, सौराष्ट्र, कोंकण, करहाट, कर्णाट और बर्बर। इससे ऐसा जान पड़ता है कि लाट से लेकर केरल तक की समस्त पट्टी कोंकण मानी जाती थी। सप्त कोंकण केरळ तक फैली है। परदेशी प्रवासी टॉलेमी याने गुजरात व उत्तर कोकण याचलारिका व दक्षिण कोकणास आरिका म्हटले आहे । कुछ प्राचीन ग्रंथों में 'कुंकण' या 'कुकण' शब्दों के उल्लेख मिलते हैं।

डॉ.रायगड के मतानुसार प्राचीन ग्रंथों में ई.पू. चौथी शताब्दी के आसपास कोकणा शब्द का उल्लेख मिलता है। महाभारत, विष्णुपुराण, बृहत्संहिता, कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' आदि ग्रंथों एवम् चालुक्य नरेशों के शिलालेखों में भी कोकण का संदर्भ प्राप्त होता है। इनके अतिरिक्त पेरिप्लस, प्लिनी, टॉलेमी, स्टेबी, अलबरुनी इत्यादि प्राचीन विद्वानों के ग्रंथों में भी 'कोंकण' या 'कुंकणा' का उल्लेख मिलता है।[१]

मध्यकाल में कोंकण के तीन भाग कहे जाते थे- तापी से लेकर वसई तक के प्रदेश को 'बर्बर', बाणकोट तक को 'विराट', देवगढ तक के विस्तार को 'किरात' और नर्मदा के दक्षिणी तट से लेकर कोंकण प्रांत तक के पूर्व के सारे विस्तार को 'अपरांत प्रांत' कहा जाता था। इस 'अपरांत' को ही बाद में 'कोंकण' कहा गया। एक दूसरे मत के अनुसार परशुराम ने जीती हुई भूमि का दान ब्राह्मणों को कर देने के कारण आदिवासियों के रहने के लिए कोई भूमि बची नहीं थी तब परशुराम ने समुद्र शंभर योजना मार्ग द्वारा अपरांत प्रांत का निर्माण किया था। भूगर्भ शास्त्रियों के मतानुसार तो कोंकण प्रदेश ज्वालामुखी वाला प्रदेश है। "कोकण हा प्रांत ज्वालामुखीच्या उत्पातात समुद्र तळा पासून वर उडविला गेलेला प्रदेश

आहे असे भूगर्भ शास्त्रज्ञांचे मत आहे।" इस लिए इस जनजाति को इस विस्तार की 'मूल निवासी' (आदिवासी) मानी जाती है।

१.२ मूल निवास-स्थान

दक्षिणी गुजरात में इस राज्य की माताओं जैसी नर्मदा और तापी नदियों के बीच सतपुड़ा पर्वत पड़ता है, जिसके वन क्षेत्र में नंदुरबार, सोनगढ़, वांसदा, धरमपुर आदि प्रदेश हैं। यहाँ के आदिवासियों में कथा और गीतों की एक सुदीर्घ परंपरा है। यहाँ की कुंकणा और डांगी बोलियों में सृष्टि के प्रलय और उसके पुर्ननिर्माण की कथा में अन्नदेवी कनसरी और मावली का स्थान प्रमुख है। यहाँ के आदिवासियों में बीज की पाट-उपासना का प्रचलन है। विविध प्रकार के विधानों से देव-देवियों की पूजा-विधि की जाती है। रामायण, महाभारत और अन्य धार्मिक आख्यान यहाँ की श्रृत-परंपरा के मुख्य अंग हैं। इन आदिवासियों की ये कथाएँ राम-कथा, कृष्ण-कथा और पांडव आदि की लिखित कथाओं से भिन्न हैं।

१.३ कुल

कुंकणा जनजाति, जाति और कुलों से पहचानी जाती है। इनके कुलों की संख्या ५० से अधिक हैं। जिनके नाम हैं- इम्पाल, कुरकुटिया, कलत, कोंकणी, कटारा, खांडवी, खांडरा, गेईन, गाइन, गवलु, गवडा, गांगोडा, गायकवाड, गांवित, गुजरात, गांगरडे, घुटिया, चौरा, चवधरी, चहवाण (वाघाबारी), चौधरी, चावरा, थुरपडिया, टोपलिया, दाधव, दलवी, देशमुख,धूम, धनगरिया, थाकरिया, निकुळिया, जादव, पाडवी, पढेर, पवार, मालवा, माहला, महाकाळ, भोया, भोये, भडागिया, बिरारी, बागुल, बोरसर, भुसारा, भगरिया, भगरे, राउत, रावत, वाढु, पवार, थोराट, वळवी, वाडकर, वाघेरा, वर्था, वालगढ, शहरिया, सांबेर, सवरा, सांभर, साम्रा, आदि।

१.४ कुंकणा जातिः उत्पत्ति विषयक मत

कुंकणा जनजाति दक्षिणी गुजरात की एक महत्वपूर्ण जाति है। ये लोग महाराष्ट्र के कोंकण प्रांत से गुजरात में आये थे, ऐसा माना जाता है। कोंकण प्रदेश से आये होने के कारण इन्हें 'कुंकणा' और इनकी बोली को 'कुंकणा बोली' कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि प्राचीन समय में कोंकण प्रांत एक पूर्ण विकसित सत्ता थी। उत्तर में कोंकण प्रांत की सीमा नागसारिका (हाल का नवसारी जिला) के पूर्णा नदी तक व्याप्त थी। पुरी (महाराष्ट्र का थाणे) इसकी राजधानी थी।

इस जाति की उत्पत्ति के बारे में कुछ और भी जनश्रुतियाँ प्रसिद्ध हैं। जो इस प्रकार है-

१. कुंकणाओं के मूल निवास स्थान महाराष्ट्र के कोंकण प्रदेश में १९४२ से लेकर १५०० तक भीषण अकाल पड़ा। उन लोगों ने अकाल के कारणों को जानने की कोशिश की तो पता चला कि वहाँ के लोगों पर कुंकणा आदिवासियों के कारण देव का अभिशाप पड़ा है। इस कारण उन्हें अपना वतन छोड़ना पड़ा। और उन्होंने महाराष्ट्र और गुजरात की सीमा के जंगलों में आसरा लिया। इस प्रकार इस जनजाति के अलग-अलग कबीले के लोग गुजरात में बस गये।

२. कुंकणा जनजाति के आदि वंशज महाराष्ट्र के नाशिक जिले के गोडशी गाँव के थे। अकाल के वक्त ये भीलों के शासन के समय गुजरात के आहवा-डांग में आ बसे। आहवा-डांग में पहले सिर्फ भील ही रहते थे जो शिकार करते थे। जबकि कुंकणा आदिवासी खेती करते थे। धरमपुर-वांसदा में बसे ये आदिवासी कुंकणा कहलाये तो व्यारा के आसपास बसे कुनबी।

३. उत्तर कोंकण प्रांत के अपराजित राजा मल्लिकार्जुन, कुमारपाल के साथ की लड़ाई में हाथी पर से गिर पड़े थे, उसकी हत्या कर कुमारपाल ने उत्तर कोंकण प्रांत जीत लिया था। जिसके परिणाम स्वरूप कुंकणा आदिवासियों को उस प्रदेश को छोड़ गुजरात-महाराष्ट्र के जंगलों में बसना पड़ा। कुछ नृविज्ञान शास्त्रियों का मानना है कि "The ancestors of this Kokna tribal community were the primary inhabitants of the Konkan and it is from their ancient speeches that the germination of the contemporary Konkni language has actually taken shape. The language of the Kokna tribal community is originated From the Indo-Aryan family. Moreover, the Kokna people also speak in Marathi language and for writing they use Devanagri script." अनुसूचित जातियाँ और अनुसूचित जनजातियां आदेश (संशोधन) अधिनियम १९७६ (The Scheduled Castes and Scheduled Tribes Orders (Amendment) Act, १९७६ के अनुसार इसे कुक्ना, कोकनी, Kokna, Kokni, Kukna कहा गया है-

१.५ कुंकणा की जनसंख्या

दक्षिणी गुजरात के वलसाड जिले के धरमपुर एवम् कपराडा तहसील आदिवासी बहुल हैं। इसकी प्रमुख जनजातियाँ कुंकणा एवम् वारली हैं। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष १९६१ की जनसंख्या के अनुसार हमारे देश के विभिन्न राज्यों में आदिवासियों की जनसंख्या प्रतिशत में निम्नलिखित थी-

तलिक 1

अंडमान एवं निकोबार द्वीप (८.२७%),	आंध्र प्रदेश (६.६३%)
अरुणाचल प्रदेश (६४.६३%)	असम (१२.४२%)
बिहार (०.९२%)	छत्तीसगढ़ (३१.८२%)
दादरा एवं नगर हवेली (७८.८२%)	दमन द्वीप (८.८६%)
गोवा (०.०४%)	गुजरात (१४.७९%)
हिमाचल प्रदेश (४.०२%)	जम्मू-कश्मीर (१०.९८%)
झारखंड (२६.३४%)	कर्नाटका (६.५५%)
केरल (१.१४%)	लक्षद्वीप (९४.६०%)
मध्य प्रदेश (२०.२६%)	महाराष्ट्र (८.८७%)
मणिपुर (३८.९६%)	मेघालय (८६.४२%)
मिजोरम (९४.१९%)	नागालैण्ड (८८.९८%)
उड़ीसा (२२.१९%)	राजस्थान (१२.५७%)
सिक्किम (२०.६१%)	तमिलनाडु (१.०५%)
पश्चिम बंगाल (५.४९%)	उत्तर प्रदेश (०.०७%)

इस प्रकार भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के अनुसार १९६१ में गुजरात में आदिवासियों की जनसंख्या कुल आबादी की १४.७९% थी। ई.स. १९८१ में कुंकणा आदिवासियों की जनसंख्या २,३८,७२५ थी। जो गुजरात के आदिवासियों की जनसंख्या की ४.९२ प्रतिशत थी। statistical profileofscheduled tribesin India २०१० के अनुसार गुजरात में १९९१ में आदिवासियों की जनसंख्या ६१,६१,७७५ थी और २००१ में ७४,८१,१६० थी।[२] जो राज्य की जनसंख्या की १४.७६ प्रतिशत और देश की जनसंख्या की ८.८७ प्रतिशत थी। ई.स.१९९१ में इन आदिवासियों की जनसंख्या २,५९,२५३ थी। वर्ष २००१ की जनगणना के अनुसार देश की कुल आबादी में आदिवासियों की संख्या ८.१४% है जो लगभग आठ करोड़ पैतालीस लाख दस हजार है और देश के क्षेत्रफल का लगभग १५% भाग पर स्थापित है। २००१ की जनगणना के अनुसार गुजरात में आदिवासियों की जनसंख्या ७४,८१,१६० थी। जनगणना के अनुसार ई.स.२००१ में गुजरात में कुंकणा आदिवासियों की जनसंख्या ३,२९,४९६ थी जो गुजरात के आदिवासियों की ४.४ प्रतिशत थी। २००१ में वलसाड जिले में आदिवासियों की जनसंख्या ५४.८ प्रतिशत थी। २००१ में वलसाड जिले में कुंकणा आदिवासियों की जनसंख्या १,२३,४५२ थी जो कुल आदिवासियों की १०.३ प्रतिशत थी। २००१ में डांग जिले में ४८,९१७ एवम् नवसारी जिले में १,१४,१८६ थी। तो महाराष्ट्र के धुले में इनकी जनसंख्या ८९,७५३, यवतमाळ में ९३,९२९, रत्नागीरि में ४३७, नंदुरबार में ४०,८४८, और ऩाशिक में ३,६०,७५५ थी, दादरा और नगरहवेली में २१,४८५ और कर्नाटक के उत्तर कर्नाटक में जिले में ३००६ थी। राजस्थान में इनकी जनसंख्या१,४२० थी।[३]

२००१ की जनगणना के अनुसार भारत के ७५ जिलों में आदिवासियों की जनसंख्या ५० प्रतिशत से अधिक है। ५० जिलों में २५ से ५० प्रतिशत तक है।२००१ की जनगणना के अनुसार आदिवासियों की जनसंख्या वलसाड जिले में ३,२९,४९६, नवसारी में जिले में ३,६७,३०७ और सुरत जिले में-१,०८,७६१थी।

Statistical profile of scheduled tribes in India २०१० के अनुसार १९९१ में गुजरात में आदिवासियों की जनसंख्या- ६१६१७७५ थी जो २००१ में ७४,८१,१६० हो गई थी। इस प्रकार २००१ की जनसंख्या में २१.४१ प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई थी।२०११ में गुजरात में आदिवासियों की कुल जनसंख्या ७४,८१,१६० थी।[४] जो गुजरात की कुल आबादी की १४.८ प्रतिशत थी। २०११ में वलसाड जिले में आदिवासियों की जनसंख्या-२३,६२,८०८ थी। जिनमें कुंकणा आदिवासियों की कुल जनसंख्या-४,०१,७१६ थी, सुरत जिले में ७१,७७२ थी तो डांग जिले में ४३,३८८ थी और कुनबियों की जनसंख्या-९६,७१६ थी।

इनकी बोली को कुंकणा बोली कहते हैं। ये इस विस्तार के आदिम वासी हैं। लोक-साहित्य की दृष्टि से यह बोली इस प्रदेश की धोडिया और वारली बोलियों से समृद्ध है। मौखिक साहित्य की इसमें भरमार है।

२. कुंकणा बोली

कुंकणा आदिवासी गुजरात के वलसाड, नवसारी व डांग जिले में, महाराष्ट्र के धूळे, नाशिक और थाणे जिले में, दादरा और नगर हवेली में, कर्नाटक तथा राजस्थान के दक्षिणी कनारा जिले में बसे थे। ये आदिवासी कनारा (Kanara), कनारा कोंकणी (Kanara Konkani), कोकणा

(Kokna), कोकणी (Kokni) नाम से पहचाने जाते थे। इनकी बोली का समावेश इंडो-यूरोपियन, इंडो इरानियन, इंडो-आर्यन, साउथर्न जोन तथा कोंकणी के अंतर्गत होता है। यह बोली देवनागरी एवम् गुजराती लिपि में लिखी जाती है। १९९८ में इस बोली के बोलने वालों की संख्या लगभग एक लाख से अधिक थी।

कोंकणा या कोकणा बोली के संदर्भ में डॉ.नंदकुमार कामत का यह मत दर्शनीय है- "The first striking reference was to the Kokna tribals, also known as Kokni, Kukni or Kukna. They were the original inhabitants of the Konkan. They speakKokni-an Indo-Aryan language at home and Marathi with others.They are concentrated in Nasik, Thane and Dhule. In Gujarat, their major concentration is in Valsad and Dang districts. In Dadra and Nagar Haveli, the Kokna are distributed in 60 villages. In recreating the history of Konkani, very little attention has been paid to these original inhabitants of the Konkan, their tribal lexicography and Kokni sociolinguistics. It is possible that their ancestors were the first settlers of the Konkan and most probably the seeds of the modern Konkani language are hidden in their ancient speech." [५]

कुंकणा और वारली बोली में समानता होते हुए भी कुछ भिन्नता है। जैसे हिंदी 'कहाँ' शब्द को वारली में 'कठ' और कुंकणा बोली में 'कोठ' कहा जाता है। हिंदी 'नहीं' शब्द के लिए वारली बोली में 'अंह' और कुंकणा बोली में 'नांय' शब्द का प्रयोग होता है।

कपराडा तहसील में वारली, कुंकणा और कोळचा बोली बोली जाती है। जिस गाँव या विस्तार में वारलियों की आबादी दूसरे आदिवासियों से अधिक हो, वहाँ शुद्ध वारली बोली का प्रयोग होता है। जहाँ वारली और कुंकणा आदिवासियों की आबादी हो वहाँ वारली और कुंकणा बोली का मिश्रित रूप का प्रयोग देखा जा सकता है। कोळचा आदिम जनजाति की आबादी कम होने के कारण वे वारली-कुंकणा मिश्रित बोली का ही प्रयोग करते हैं।

१९९१ की जनगणना के अनुसार दादरा नगर हवेली में कोंकणी बोलनेवालों की संख्या १७,०६२ थी जो दादरा नगर हवेली में बोली जानेवाली भाषाओं की १२.३२ प्रतिशत थी।

निष्कर्षः कुंकणा जनजाति दक्षिणी गुजरात की एक महत्वपूर्ण जाति है। किन्तु आधुनिक युग तक आते आते इनमें बहुत सारा परिवर्तन आ चुका है। इस जनजाति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आधुनिकता और परंपरा का सुंदर समन्वय इन्होंने सहज रूप में कर लिया है। यही कारण है कि कुंकणा जनजाति के पुरानी पीढ़ी के लोग अपनी बोली व संस्कृति के द्वारा अपनी अस्मिता बचाये हुए हैं। नयी पीढ़ी कुंकणा बोली का जतन तो कर रही है किन्तु संस्कृति से दूर होती जा रही है।

संदर्भ संकेत

1. राजवाडे, विश्वनाथ काशीनाथ. महिकावतीची बखर,1920, वरदा प्रकाशन, सेनापति बापट मार्ग, पुणे, पृ.16
2. Statistical profile of scheduled tribesin India 2010, 66.
3. वही. पृ.766
4. Statistical profile of scheduled tribes in India 2010, 66-67.
5. The navhind times, Goa, May 4, 2003